

इस प्रश्नपत्र में से कम या ज्यादा मात्रा में प्रश्न दिनांक ३ मार्च, २०१३ को होनेवाली मुख्य परीक्षा में भी पूछे जाने की संभावना है ।

बोचासणवासी श्री अक्षरपुरुषोत्तम स्वामिनारायण संस्था
सत्संग शिक्षण परीक्षा

पूर्व कसौटी : सत्संग परिचय : प्रश्नपत्र - १

जनवरी, २०१३

समय : सुबह ९.०० से ११.१५

कुल गुणांक : ७५



अनुपस्थित परीक्षार्थी की उत्तर पुस्तिका का केवल यही पृष्ठ वापस भेजना है ।

परीक्षार्थी के नाम सम्बंधित विवरण के साथ 'बारकोड' अंकित किया गया है । कृपया उस पर किसी प्रकार का नुकसान मत कीजिए ।

अनिवार्य : निम्न लिखित सूचना की परीक्षार्थी को अपने आप पूर्ति करनी है

दिनांक महीना वर्ष
परीक्षार्थी का जन्म दिन

परीक्षार्थी का अभ्यास

परीक्षार्थी की उत्तर पुस्तिका पर अंकित नाम सहित अनिवार्य विवरण की सत्यता की जाँच करने के पश्चात् वर्ग निरीक्षक हस्ताक्षर करें ।

वर्ग निरीक्षक के हस्ताक्षर

परीक्षार्थीओं को महत्वपूर्ण सूचनाएँ :-

- मुख्य परीक्षा के दिन वर्गखंड में उपस्थित प्रत्येक परीक्षार्थी वर्ग निरीक्षक से अपनी नामयुक्त उत्तर पुस्तिका के मुख्य पृष्ठ पर निर्दिष्ट स्थान पर वर्ग निरीक्षक के हस्ताक्षर करा लें ।
- बिना वर्ग निरीक्षक के हस्ताक्षर की उत्तर पुस्तिका मान्य नहीं होगी ।
- दायीं ओर दिए गए अंक प्रद्वन के गुण दर्शाते हैं ।
- सूचनानुसार प्रश्नों के उत्तर दीजिए । अस्पष्ट उत्तर अमान्य होंगे ।
- मुख्य परीक्षा में उत्तरवही के ईलावा अतिरिक्त पनों में लिखे हुए उत्तर मान्य नहि होंगे ।
- परीक्षार्थी केवल ब्लू या केवल काली स्याही वाली पेन से ही उत्तर पुस्तिका में उत्तर लिखे । पेन्सिल से अथवा लाल, हरी या अन्य स्याही से लिखे गए उत्तर या एक से ज्यादा स्याही से लिखि गई उत्तर पुस्तिका मान्य नहीं होगी ।
- परीक्षा कार्यालय, अहमदाबाद की पूर्व मंजूरी बिना मूल परीक्षार्थी के बदले 'लेखाकार' या 'डमी राईटर' एवं 'दूसरे व्यक्ति' द्वारा लिखी गई परीक्षा की उत्तरवही रद गिनी जाएगी । एक से ज्यादा प्रकार के अक्षरों की लिखावट रद मानी जाएगी ।
- परीक्षा खंड के बाहर और अन्य सभी परीक्षार्थीओं से अलग या परीक्षा के नियमों का उल्लंघन कर के दी गई परीक्षा मान्य नहीं होगी ।

मोडरेशन कार्यालय के लिए	प्रश्न नंबर (गुण)	प्राप्तांक
	१ (९)	
	२ (६)	
	३ (५)	
	४ (५)	
	५ (४)	
	६ (४)	

विभाग-१, कुल गुण (३३)

मोडरेशन कार्यालय के लिए	प्रश्न नंबर (गुण)	प्राप्तांक
	७ (९)	
	८ (४)	
	९ (५)	
	१० (४)	
	११ (६)	
	१२ (४)	

विभाग-२, कुल गुण (३२)

मोडरेशन कार्यालय के लिए	प्रश्न नंबर (गुण)	प्राप्तांक
	१३ (१०)	

विभाग-३, कुल गुण

परीक्षक के हस्ताक्षर

मोडरेशन विभाग भाटे ५

गुण शब्दोंमां
चेकर - नाम

विभाग - १ : सहजानन्द चरित्र - द्वितीय संस्करण, मार्च - २००९

प्र. १ निम्नलिखित कथन कौन, किसको और कब कहता है, यह लिखिए । (९)

१. "तुम इस घटना को निरंतर स्मरण में रखना ।"

कौन कहता है ? किसको कहता है ?

कब कहता है ?

.....

.....

२. "आपके ही प्रताप से मेरा राज्य समृद्ध है ।"

३. "ऐसे ही तुम लोगों को मैं सम्पूर्ण बनाऊँगा ।"

प्र. २ निम्नलिखित कथनों के बारे में कारण लिखिए । (दो से तीन पंक्ति में) (६)

१. एक साथी संत को लेकर गुणातीतानंद स्वामी गढ़डा की ओर चल पड़े ।

.....

.....

.....

.....

.....

२. बंदर माला घुमाने लगा और चोपाइयाँ भी बोलने लगा ।

३. श्रीजीमहाराज के आश्रितो को सर्वोपरी भगवान की प्राप्ति का गौरव रहता है ।

प्र. ३ निम्नलिखित किन्हीं एक प्रसंग के बारे में १५ पंक्ति में टूकनोंध लिखिए । (वर्णनात्मक) (५)

१. नरनारायण देव की प्रतिष्ठा

२. सौराष्ट्र के मंदिर

३. जीवाखाचर की परीक्षा

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

प्र. ४ निम्नलिखित प्रश्नों के एक (संपूर्ण) वाक्य में उत्तर लिखिए । (५)

१. जगजीवन द्वारा किये गये कटाक्ष का श्रीजीमहाराज ने क्या प्रत्युत्तर दिया ?

.....
.....

२. श्रीजीमहाराज ने शाकोत्सव कहाँ किया था ?

३. श्रीजीमहाराज ने पूछा फिर भी किसको मोक्ष का साधनरूप द्वलोक का विचार नहि आया ?

४. श्रीजीमहाराज ने विवाह के माँगलिक अवसर पर स्त्रियों को कैसे गीतों का गान करने की आज्ञा दी ?

५. पातालभाई की पत्नी क्यों पछतावा करने लगी ?

प्र. ५ निम्नलिखित विकल्पों में से केवल सही विकल्प के आगे दिए गए खाने में सही (✓) का निशान करें । (४)

सूचना : एक या एक से अधिक विकल्प सही हो सकते हैं । सभी सही विकल्प के आगे ही सही का निशान किया होगा तभी पूर्ण गुण दिए जायेंगे, अन्यथा एक भी गुण नहीं दिया जाएगा ।

१. श्रीजीमहाराज ने बनाये हुए मंदिर

(१) धोलेरा

(२) धोलका

(३) वरताल

(४) पंचाला

२. श्रीजीमहाराज ने कहाँ कहाँ बीमारी ग्रहण की ?

(१) जालिया

(२) पंचाला

(३) जेतपुर

(४) बोचासण

प्र. ६ निम्नलिखित वाक्यों में रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए । (४)

१. श्रीजीमहाराज बीमारी को दरकिनार करके काकाभाई को दर्शन देने पधारे ।

२. श्रीजीमहाराज ने शीतलदास को दीक्षा देकर नाम रखा ।

३. मुक्तानंद स्वामी ने को उलहना दीया ।

४. का अभिमान रखनेवाले कभी साधुता के गुण सिद्ध नहीं कर सकते ।

विभाग - २ : सत्संग वाचनमाला भाग - २ - प्रथम संस्करण, जुलै - २०००

प्र. ७ निम्नलिखित कथन कौन, किसको और कब कहता है, यह लिखिए । (९)

१. "यदि तुम संन्यासी (त्यागी) बन जाओ तो हम तुम्हें यहाँ रख लेंगे ।"

कौन कहता है ? किसको कहता है ?

कब कहता है ?

.....
.....

२. "मेरा तो बहुत बड़ा कुनबा है ।"

३. "डरो मत यहाँ कोई भय नहीं है, जाओ और शांति से सो जाओ ।"

प्र. ८ निम्नलिखित कथनों के बारे में कारण लिखिए । (दो से तीन पंक्ति में) (४)

१. चार आदिम महाराज की चारपाई ऊपर-नीचे झुलाने लगे ।

.....
.....

.....
.....

२. जागा भक्त को ऐसा लगा कि जैसे किसी ने उन्हें गोली मार दी हो ।

प्र. ९ 'अक्षरपुरुषोत्तम उपासना प्रवर्तन में कृष्णजी अदाश्री पर आई हुई उपाधियाँ ।' - प्रसंग के बारे में १५ पंक्ति में टिप्पणी लिखिए । (वर्णनात्मक) (५)

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

प्र.१० निम्नलिखित प्रश्नों के एक (संपूर्ण) वाक्य में उत्तर लिखिए । (४)

१. श्रीजीमहाराज ने दुर्वासा जैसा सामर्थ्य किस परमहंस में लाडूबा को दिखाया ?

२. जागा भक्त पूजा के पश्चात् कौन सा पाठ करते थे ?
३. अयोध्याप्रसादजी महाराज कब बीमार पड़े ?
४. दादाखाचर का विवाह श्रीजीमहाराजने किस के साथ करवाया ?

प्र.११ निम्नलिखित विषय के लिए सूचनानुसार छः सही क्रमांक और उस सही क्रमांक को घटनाक्रम के अनुसार लिखिए । (६)

विषय : विद्यावारिधि सद्गुरु नित्यानन्द स्वामी

१. लखनऊ के पास दतिया गाँव में नित्यानंद स्वामी का जन्म हुआ था । २. डुंगरपुर, इडर, जेतलपुर, सिद्धपुर आदि स्थानों पर सुशोभित मंदिर करवाये । ३. महाराजा सयाजीराव गायकवाड की विद्वत्सभा में उन्होंने स्वामिनारायण सम्प्रदाय को सनातन सिद्ध किया और बताया कि यह वेदों के अनुसार है । भगवान स्वामिनारायण द्वारा प्रतिपादित दर्शन अविवादित है । ४. इर्यालु नागर ब्राह्मणों ने नवाब को कहा : 'यह नरहरि पंड्या स्वामिनारायण से शास्त्रचर्चा करना चाहता है ।' ५. महाराज ने मेघपुर गाँव में भागवती दीक्षा दी और 'नित्यानंद' शुभ नाम दिया । ६. महाराजने उनको भागवती दीक्षा दी और 'निजबोधानंद' शुभ नाम दिया । महाराज की आज्ञा से उन्होंने संस्कृत की पढ़ाई की । ७. द्वारिका से वीसनगर आये । यहीं उन्हें शुभ समाचार मिले कि भगवान स्वामिनारायण स्वयं प्रगट हुए हैं । ८. महाराज उसके पिछले सब जन्मों और कर्मों के विषय में जानते थे । उन्होंने ने कहा अभी तुम उज्जैन जाओ । ९. दिनमणि विद्या के केन्द्र काशी में पढ़ने के लिए गये । १०. उन्हें अनुभव हुआ अंततोगत्वा मैंने भगवान को पा लिया । ११. स्वामी का जन्म नडियाद के निकट के एक गाँव में साठोदरा नागर ब्राह्मण परिवार में हुआ था । १२. उन्होंने ध्यानमंजरी, गोलोक दर्शन, गोविंद गीता और सत्संगीजीवन की तत्त्वार्थदीपिका आदि ग्रंथ लिखे ।

सूचना : (१) केवल सही क्रमांक के सभी

(१) केवल सही क्रमांक :

(२) यथार्थ घटनाक्रम :

छः उत्तर क्रमांक सही होंगे तो ही ३ गुण प्राप्त होंगे । (२) यथार्थ घटनाक्रम भी सही होगा तो ही ३ गुण प्राप्त होंगे, अन्यथा एक भी गुण प्राप्त नहीं होगा ।

प्र.१२ निम्नलिखित गलत वाक्य को उसके विषय के अनुलक्ष्य में सही लिखिए । (४)

सूचना :- संपूर्ण वाक्य सही लिखा होगा तो ही गुण प्राप्त होंगे, अन्यथा एक भी गुण प्राप्त नहीं होगा ।

उदाहरण : विद्यावारिधि सद्गुरु श्री नित्यानन्द स्वामी : सन् १८७२ में मार्गशीर्ष शुक्ला नवमी की रात को नित्यानन्द स्वामी ने अहमदाबाद में आचार्यश्री अयोध्याप्रसादजी महाराज, गुणातीतानन्द स्वामी, परमचैत्यानन्द स्वामी, कृपानन्दजी के दर्शन करते - करते कारण देह का त्याग किया ।

उत्तर : विद्यावारिधि सद्गुरु श्री नित्यानन्द स्वामी : सन् १९०८ मार्गशीर्ष शुक्ला अष्टमी के दिन नित्यानन्द स्वामी ने आचार्यश्री रघुवीरजी महाराज गोपालानन्द स्वामी शुकमुनि शून्यातीतानन्दजी आदि सन्तों के देखते - देखते उन्होंने अपनी नश्वर देह वरताल में छोड़ दी ।

१. स्वामी जागा भक्त : सांखडावदर के बीड में स्वामी ने जागा भक्त को एक बार सत्तर बार आलिंगन किया था और एक बार एक महिने में सत्रह बार आलिंगन किया था । किन्तु पूर्व के सभी आलिंगनो से इस नेत्रमिलन के द्वारा अधिक सुख की अनुभूति उन्हें हुई ।

उ.

२. श्री कृष्णजी अदा : तब उन्होंने छोटे शास्त्रीजी महाराज को बुलाया । उन्हें निकट बुलाकर सिर पर दोनों हाथ रखकर आशीर्वाद दिया और कहा, स्वामी ज्ञानजी स्वामी का संग रखना ।

३. प्रेमसखी प्रेमानन्द स्वामी : मैसुर के भैरवराग गानेवाले गवैये जूनागढ़ नवाब को संगीत सुनाने आये । परन्तु नवाब ने उनसे कहा, 'स्वामिनारायण के साधु प्रेमानन्द का संगीत सुनने के पश्चात् और किसीका संगीत सुनने का मन नहीं होता ।'

४. मुकुन्दानन्द वर्णी (मूलजी ब्रह्मचारी) : गढ़डा में मुक्तानन्द स्वामी ने पूछा : मूलजी ब्रह्मचारी का जोड़ीदार कौन है ? महाराज ने उत्तर दिया, ब्रह्मचारी के जोड़ीदार तो पहले से ही तय है, गुणानन्द और सहजानन्द ।

विभाग - ३ : निबंध

प्र.१३ निम्नलिखित किसी एक विषय पर करीब ३० पंक्ति में निबंध लिखिए । (१०)

१. भगवान स्वामिनारायण के युवापात्र । (स्वामिनारायण प्रकाश (गुजराती) फरवरी - २०१२, पा. नं. १२ से १४)

२. यौवन का नूर : नैतिकता (स्वामिनारायण प्रकाश (गुजराती) मार्च - २०१२, पा. नं. ८ से ११)

३. प्रारब्ध युवाजना : न परित्यजन्ति (स्वामिनारायण प्रकाश (गुजराती) अप्रैल - २०१२, पा. नं. ८ से ९)

()

.....

.....

.....

☞ आगे के पृष्ठों में निबंध (गुजराती भाषामें) दर्शाए गए है ।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....



આગામી વર્ષે ૩ માર્ચ, ૨૦૧૩ના રોજ લેવાનાર મુખ્ય પરીક્ષાની પૂર્વતૈયારી માટે મુકાતા **પ્રી-ટેસ્ટના સંપૂર્ણ પ્રશ્નપત્રો હંમેશ મુજબ જાન્યુઆરીમાં (1st January, 2013ના રોજ) મુકાશે.** નિબંધ એ સામાન્ય જ્ઞાન સહિત મુક્ત વિષય હોય છે, જે અભ્યાસક્રમના પુસ્તકોમાંથી પૂછાતા નથી. આથી પરીક્ષાર્થીઓ નિબંધની તૈયારી સારી રીતે કરી શકે તે હેતુસર આપણે વહેલાસર ફક્ત તે યાદી આપની સમક્ષ મૂકી છે.

પ્રી-ટેસ્ટના નિબંધોની યાદી

પરીચય : ૧ :

૧. ભગવાન સ્વામિનારાયણના યુવાપાત્રો (સ્વામિનારાયણ પ્રકાશ - ફેબ્રુઆરી - ૨૦૧૨, પા.નં. ૧૨ થી ૧૪)
૨. યૌવનનું નૂર : નૈતિકતા (સ્વામિનારાયણ પ્રકાશ - માર્ચ - ૨૦૧૨, ૮ થી ૧૧)
૩. પ્રારબ્ધ યુવાજના : ન પરિત્યજન્તિ (સ્વામિનારાયણ પ્રકાશ - એપ્રિલ - ૨૦૧૨, પા.નં ૮ થી ૯)

પરીક્ષાર્થી શ્રી,

સસ્નેહ જય શ્રી સ્વામિનારાયણ

સત્સંગ શિક્ષણ પરીક્ષા માર્ચ ૨૦૧૩ના નિબંધોની પૂર્વ તૈયારી માટે નીચે જણાવેલ માર્ગદર્શન અને સૂચનો ધ્યાનમાં લેવા વિનંતી.

૧. નિબંધ એટલે કોઈ નિશ્ચિત વિષય ઉપર વ્યવસ્થિત, ચિંતનપૂર્વક અને મુદ્દાસરનું લખાણ. સત્સંગ શિક્ષણ પરીક્ષામાં પૂછાતા નિબંધો સામાન્ય જ્ઞાનના આધારે, પરીક્ષાર્થીના દૈનિક જીવનમાં સત્સંગના સદ્વાચન અને કથા શ્રવણ અને મનન દ્વારા પ્રાપ્ત થયેલ જ્ઞાનની કસોટી કરતા ૩૫ થી ૪૦ લીટીમાં લખવાના હોય છે.
૨. પરીક્ષાર્થીઓની માગણીને માન આપીને આ વર્ષે પ્રી-ટેસ્ટમાં પૂછાનાર નિબંધોના વિષયો છ માસ અગાઉથી પરીક્ષાર્થીના એકાઉન્ટમાં અપલોડ કરવામાં આવ્યા છે.
૩. પ્રી-ટેસ્ટમાં જે તે પરીક્ષામાં પૂછાનાર નિબંધોના ત્રણે ત્રણ વિષયો આપવામાં આવ્યા છે. માર્ચ ૨૦૧૩ની ફાઈનલ પરીક્ષામાં આ ત્રણ વિષયોમાંથી કોઈપણ એક નિબંધ ચોક્કસપણે પૂછાશે જ. માટે જો આપ આ ત્રણે ત્રણ વિષયો તૈયાર કરશો તો આપ ચોક્કસપણે એક નિબંધ મુખ્ય પરીક્ષામાં ખૂબ જ સારી રીતે લખી શકશો.
૪. આ નિબંધોનું સામાન્ય બંધારણ, લખાણ(મેટર) મોટાભાગે ત્રણ - ચાર વર્ષ દરમ્યાનના સમયગાળામાં પ્રકાશિત થયેલ 'સ્વામિનારાયણ પ્રકાશ'માંથી લેવામાં આવે છે.
૫. અહીં આપેલા નિબંધોનું લખાણ કેવળ દિશા સૂચક છે. આ જ લખાણ ગોખીને પરીક્ષામાં લખવાની જરૂર નથી. આથી વિશેષ સારા મુદ્દાઓનું ચિંતન-મનન કરી આપની રીતે પૂર્વ તૈયારી કરીને લખી શકો છો.
૬. **ગુજરાતી માધ્યમ (ભાષા) સિવાયના પરીક્ષાર્થીઓ માટે :** આ નિબંધોનું મૂળ પ્રકાશન ગુજરાતી ભાષામાં જ હોવાથી તેનું શબ્દશઃ ભાષાંતર ન કરતાં, તેનો ભાવાર્થ સમજીને પરીક્ષાર્થીએ પોતાની રીતે સમજીને તૈયારી કરવાની રહેશે. પરીક્ષા કાર્યાલય અંગ્રેજી કે હિન્દી ભાષામાં આ નિબંધોનું ભાષાંતર આપી નહિ શકે. તેથી ભાષાંતર કરવા અંગેનો પત્રવ્યવહાર કે ઈ-મેલ પણ પરીક્ષા કાર્યાલયને કરશો નહિ તેવી નમ્ર વિનંતી છે.
૭. ગુજરાતી ભાષા વાંચી, લખી કે બોલી ન શકતા હોય તેવા પરીક્ષાર્થીઓએ માતા-પિતા, વડીલો કે અન્ય સ્વજનો-સ્નેહીઓ પાસે વંચાવીને નિબંધનો ભાવાર્થ સમજી પોતાની રીતે, પોતાના શબ્દોમાં લખીને તૈયારી કરવાની રહેશે.
૮. One essay from the above list of essays will be asked in the Final Examination of March-2013.

सत्संग शिक्षण परीक्षा - परिचय

१.

युवा लेखकीनी कवमे...

यौवनने अध्यात्मना शिष्ये लई जनार भगवान स्वामिनारायण..

- हर्ष राठोड

(डिप्लोमा-विज्जुअल आर्ट, मुंबई)

भगवान स्वामिनारायण अेटवे युवानोना तारणहार, यौवनना मर्मां अने यौवननी शक्तिओने आध्यात्मिक मार्गो लई जईने तेमने श्रेष्ठ पढे पढोयाडनार अेक विरल आध्यात्मिक विभूति.

करोडो मनवार बराय अेटला अनंत जिवोनुं कल्याण करवाना हेतुथी पृथ्वी पर अवतरेला भगवान स्वामिनारायण, युवान वये, अनेक युवानोने प्रभुभक्तिनी लगनी लगडीने अेक युवाकंति करी हती. अनेक क्षेत्रोमां माडेर युवानो राष्ट्रभरमांथी द्रोडीदोडीने युवान वयना भगवान स्वामिनारायणना व्यक्तित्वथी आकर्षाया हता. अे युवानो द्वारा भगवान स्वामिनारायण आध्यात्मिक कंतिनो अेक आगवो ँतिहास भारतीय संस्कृतिना विशाण समयपट पर रयी दीधो. गामडे गामडे धूमिने भगवान स्वामिनारायणना अे युवानोअे लाभो लोको सुधी भगवान स्वामिनारायणना आध्यात्मिक संदेश प्रवर्ताव्यो. गुजरात तेने कारणे वधु समृद्ध बन्युं - नैतिकतामां, सदाचारमां, सांस्कृतिक परंपराओमां. गुजरातमां शांति अने भक्तिनी अेक लहेर इरी वणी - भगवान स्वामिनारायणना अे युवानोने कारणे.

अे युवानोअे भगवान स्वामिनारायणनां यरणोमां जिवन समर्पित करीने परमहंस दीक्षा प्राप्त करीने समर्पणनुं अेक श्रेष्ठ उदाहरण पण समाज समक्ष पूरुं पाड्युं हतुं. अे युवानोअे पोतानी समर्पण-भक्तिमां के पोतानी आध्यात्मिक यात्रामां आवेलां अनेक प्रलोभनोने केवी रीते हुकरायां, तेनी पण अेक रोमांचक गाथा ह. अही थोडाक अेवां युवापात्रोमांथी आपणे पण आध्यात्मिक प्रेरणा मेणवीअे...

■ कल्याणदास (कडु) :

अे वर्ष हतुं विक्रम संवत १८६४नुं.

भगवान स्वामिनारायण भादरा गामे बिराजता हता. तेमणे अहीथी अेक पत्र लपीने भेपियाने रवाना कर्यो. पत्र अेक, पण संबोधन कर्युं हतुं - १८ व्यक्तित्वओने. भेपियो अडारे अडार गाम लणी घोडी लईने धूमि रह्यो हतो. कोण हता अे अडार ? सुधी अने समृद्ध कुटुंबना युवानो, गामधणीओ अने राजदरबारो ! शुं हतुं अे पत्रमां ? भगवान स्वामिनारायणना अेक आदेश हतो : 'तमो आ पत्र वांथी तत्काण धरनो त्याग करी, जेतलपुर जई, त्यां रामदास स्वामी आगण दीक्षा लई, काशी जई आवी लुज अमारी पासे आवजो.' पत्र वांयतां ज जोगियां पारेवांनी जेम पडतुं मूकी, सौ भगवान स्वामिनारायणना आदेशने मस्तके यढावी, संसार छोडी सौ यावी नीकण्या. पण आ अडारमां अेक वधु युवान उमेराई गयो, अे हता - सौराष्ट्रमां सुरेन्द्रनगर जिल्लाना कडु गामना कल्याणदास. भगवान स्वामिनारायण लभेला पत्रमां कल्याणदासनुं तो नाम पण नडोतुं. अडार नामोमां तेमना मामाने संबोधीने लभायेलो अे पत्र, लग्नना मांडवे परणेतरे साथे केरा इरी रडेला कल्याणदासे पण वांय्यो. पत्रमां भले नाम नडोतुं, परंतु नामनी यादीमां हेल्ले 'आदि' अर्थात् 'वगेरे' लभ्युं हतुं. कल्याणदास माटे अेटवुं ज पर्याप्त हतुं. लग्नग्रंथिथी जोडाई रडेला भाणजे कल्याणदासे, ते ज क्षणे लग्नना केरा अटकावीने, कांडे बांधेनुं मीढण छोडीने मामानी साथे भगवान स्वामिनारायणनी आज्ञामां जंपलावी दीधुं. 'आदि' शब्दमां पोताने गणावीने लग्ननी योरीअेथी उभा थईने संसारी रंग उतारी भगवो धारी लीधो. भगवान स्वामिनारायण अे युवाननी आ समर्पण भक्तिथी वारी गया. तेमणे कल्याणदासने आशीर्वाद आपीने पुनः संसारमां जवानी आज्ञा करी, परंतु कल्याणदासे कायम भगवान स्वामिनारायणनां यरणोमां साधु तरीके रडेवानुं ज पसंद कर्युं. आवुं अद्भुत कार्य कर्युं तेथी भगवाने तेमनुं नाम 'अद्भुतानंद स्वामी' पड्युं. आज्जे २०० वर्ष पछी पण अे युवाननी पुमारी अनेकने समर्पणनी प्रेरणा आपी रही ह.

■ पीपणावना प्रभाशंकर :

लग्ननो मांडवो नंभायो, कुलेकुं नीकण्युं, ढोल-त्रांसा वाग्यां, गाडां जोडायां, अस जान नीकणवानी तैयारीमां ज हने शणगार सज्जने भेठेला वरराजना हाथमां अेक भेपियाअे पत्र मूक्यो. पत्र वांयतां ज वरराज उलो थई गयो. सौने संबोधीने तेणे कहुं, 'आ लग्न हवे अंध रडेसे. मारा ँष्टडेव भगवान श्री स्वामिनारायणना आदेश ह, तेओ मने वडताल तेडावे ह.' जिवननी सौथी महत्त्वनी धडीओमां गणाती मंगल धडीने पण गौण गणीने, आवो त्वरित अने अडग निर्णय लेनार युवान हता - पीपणाव गामना प्रभाशंकर.

अने सौना आश्रय वच्ये मीढणअंधा प्रभाशंकर वायुवेगे वडताल पडोथी गया. अही भगवान स्वामिनारायणने मण्या त्यारे भगवान अे युवाननी तत्परता पर राज थई गया. तेओ बोली उठ्या : 'प्रभाशंकर, अरेअर तमे भगत पाका.'

भगवाने आपेला आदेशने अनुसरीने प्रभाशंकर पुनः धरे पडोथ्या, परंतु थोडा समय पछी उभाणमां भगवान स्वामिनारायण यज्ञ करी रह्या हता, त्यारे पण अेवुं ज बन्युं ! आ वभते पण प्रभाशंकरनां लग्न लेवायां हतां ने भगवान स्वामिनारायणनुं नोतरुं आव्युं ! इरी प्रभाशंकर लग्नने पडतां मूकी, उभाण यज्ञमां सेवामां छोडी गया. तेमणे सौने कहुं, 'लग्न तो आवती साल पण थशे पण श्रीज मडाराज कंई उभाणमां इरी यज्ञ करवाना हे ?!'

પળનાય વિલંબ વિના બે-બે વાર પોતાનાં લગ્નને ઠેલનાર એ યુવાનને માટે ભગવાનની આજ્ઞાનું પાલન કરીને સમર્પણ દ્વારા તેમની પ્રસન્નતા વધુ મહત્વની હતી.

■ બ્રહ્માનંદ સ્વામી :

મહેચ્છા ન રાખે તે યુવાન શાના ?

રાજસ્થાનના શિરોહી રાજ્યના ખાણ ગામના લાડુદાન બારોટ કિશોરવયમાં આબુ પહાડ પરનાં જૈન મંદિરો જોઈને ભવ્ય મંદિરો રચવાની મહત્વાકાંક્ષામાં રાચતા. લાડુદાનને એવી પણ મહેચ્છા જાગી કે અજોડ કાવ્યો રચીને ખ્યાતિ પામું ને મોટા મોટા સમ્રાટોના માન-સન્માન પ્રાપ્ત કરું. આ માટે ૧૮ વર્ષના લાડુદાન શિરોહી દરબારનો પત્ર લઈ કચ્છના મહારાજા પાસે ગયા. રાજકવિએ લાડુદાનમાં રહેલી શીઘ્ર કાવ્યશક્તિ, કલ્પનાશક્તિ, યાદશક્તિ ને ચતુરાઈ - આ ચારેય દૈવી શક્તિઓને પારખી, ૧૦ વર્ષ ભણાવી, શુભરચના સાથે વિદાય આપી. ત્યારબાદ લાડુદાન ધમડકામાં ૨ વર્ષ રહી સંગીત, સંસ્કૃત, સામુદ્રિક વિદ્યા, શતાવધાની કળા તથા વાદન કળા શીખ્યા. ગીત, વાદ્ય, નૃત્ય, નાટ્ય, શિલ્પ, રત્ન-પરીક્ષા, પાકશાસ્ત્ર, તરવાની કળા, અશ્વવિદ્યા, શુકનકળા એમ કુલ ૨૪ વિદ્યા-કળાઓ શીખ્યા. એ ઉપરાંત વિદુરનીતિ, યાજ્ઞક્યનીતિ, શુકનીતિ પણ શીખ્યા. આ તેજસ્વી વિદ્યાર્થીની એક પછી એક ચઢતી કળા જોઈને પ્રસન્ન થતાં ગુરુએ કહ્યું, 'લાડુદાન, હવે એક જ કળા તમારે શીખવાની બાકી રહી છે. એ છે પરમાત્મામાં સદાકાળ ચિત્ત જોડવાની કળા. એ શીખે એને કોઈ વાતની ન્યૂનતા ન રહે.'

લાડુદાનને એ કળામાં માહેર થવાની ઈચ્છા પણ જાગી, પરંતુ બીજા માનપાનના ઘોંઘાટમાં એ ઈચ્છા સહેજ દબાઈ ગઈ. ધમડકા છોડ્યા પછી ધ્રાંગધ્રામાં કવિ તરીકે માન-ઈનામ-ખ્યાતિ મેળવ્યાં. અનેક રજવાડાંઓનાં નિમંત્રણો મળ્યાં ને ઠેર ઠેર દિગ્વિજય કરતાં કરતાં લાડુદાન રાજકવિ તરીકે ભાવનગરના મહારાજા વજ્રસિંહના મહેમાન બન્યા. પોતાની આગવી પ્રતિભાથી તેમણે દરબારીઓમાં શોભા વધારી. વજ્રસિંહે ખુશ થઈ રાજઝવેરીને કવિના અંગેઅંગનાં માપ લઈ સોનાનાં આભૂષણો ઘડવા કહ્યું. લાડુદાનજીએ એ ઝવેરીના કપાળમાં નવીન તિલક જોયું એટલે જિજ્ઞાસાથી તે વિશે પૂછ્યું. પ્રગટ પુરુષોત્તમ ભગવાન સ્વામિનારાયણનો આશ્રિત છું એમ જણાવ્યું. શું ખરેખર ! કળિયુગમાં ભગવાન પૃથ્વી પર અવતાર ધરે ? લાડુદાનજી વિચારમાં ચઢી ગયા, જો એ ખરેખર ભગવાન હોય તો તેની કસોટી કરવી જોઈએ. ભાવનગરના મહારાજાએ પણ તેમને એ માટે વધુ પ્રોત્સાહિત કર્યાં.

અને લાડુદાનજી મારતે ઘોડે ભગવાન સ્વામિનારાયણની કસોટી કરવા ગઢડા પહોંચી ગયા. ભગવાનનાં પારખાં કરવા મનમાં ચાર સંકલ્પો કર્યા અને ભગવાન સ્વામિનારાયણે તેમના એ બધા સંકલ્પો પૂર્ણ કર્યાં. યુવાન રાજકવિ લાડુદાનને હવે કોઈ શંકા નહોતી. તેમણે સૌ સ્વજનોને કહી દીધું : 'હું હવે ભગવાનનો થઈને રહીશ. ગુણ એમના ગાઈશ, મહિમા એમનો સાંભળીશ ને સંભળાવીશ, કાર્ય એમનાં કરીશ અને એમને તથા એમના સંતોને રાજી કરીશ.' નદી જેમ સાગરમાં સમાવા દોટ મૂકે તેમ લાડુદાને દોટ મૂકી. લાડુદાનનાં લગ્ન પણ નક્કી થઈ ગયેલાં, પરંતુ કારકિર્દીમાં વિઘ્ન આવે તે હેતુથી લાડુદાને લગ્નની ઉતાવળ નહોતી કરી. પણ તેમને ક્યાં ખબર હતી કે વિવાહને વહેતો મૂકીશું તો વરને વૈરાગ્ય ખેંચી જશે ? આખરે લાડુદાન શ્રીજીના રંગે રંગાઈને દીક્ષિત થઈ ગયા. 'શ્રીરંગદાસ' નામ ધારણ કર્યું. પાછળથી ભગવાન સ્વામિનારાયણે તેમને 'બ્રહ્માનંદ સ્વામી' નામ આપીને અમર કરી દીધા. પોતાના વિરાટ કાવ્યવારસા દ્વારા આજેય એ યુવાન કવિરાજ બ્રહ્માનંદ સ્વામી, યૌવનના ઉચ્ચ આધ્યાત્મિક ગૌરવની છડી પોકારે છે.

■ દાદાખાયર :

'દાદો તે દાદો, આવો ભક્ત બીજે ન મળે.' આ શબ્દો હતા ભગવાન શ્રી સ્વામિનારાયણના. ગઢડાના ગામધણી એભલ ખાયરના પુત્ર ઉત્તમકુમાર એ જ દાદાખાયર. ભગવાન સ્વામિનારાયણનો પડ્યો બોલ ઝીલવા સદા તત્પર રહેતા યુવાન ભક્ત દાદાખાયરે ન દેહની કે ન ધનની પરવાહ કરી. તેમને મન ભગવાનનું વચન એ જ સર્વોપરિ હતું.

એક વાર ભગવાન સ્વામિનારાયણે તેમને ઘેલાને કાંઠે ફરતા સાધુઓના ઉતારા માટે કાંઈક કરવા કહ્યું. ત્યારે દાદાખાયર પોતાનો રાજદરબાર તે માટે આપવા તૈયાર થઈ ગયા. 'તો તમે ક્યાં રહેશો ?' એમ પૂછ્યું તો કહે, 'નદી કિનારે ઓઘામાં ક્યાંક પડ્યા રહેશું.' ભગવાનના ભક્ત માટે આવું સમર્પણ ! પોતાના જ ઘરમાં ભગવાન સ્વામિનારાયણે પદ વાર તેમનો ઉતારો બદલાવ્યો ! દરેક વખતે તેમણે એ આજ્ઞા સહર્ષ સ્વીકારી લીધી !

એક વખત ગઢડામાં વસોના ગિરધરભાઈ શ્રીહરિને આમંત્રણ આપ્યું ત્યારે શ્રીહરિએ કહ્યું, 'દાદાખાયરે તો પોતાનું સર્વસ્વ મને અર્પણ કર્યું છે. ઢોરનાં દૂધ-દહીં પણ સંતોને અર્થે કરી નાંખ્યાં છે. આવી ભક્તિ જોઈ દાદાથી છૂટા થવાનું મન થતું નથી.' આ હતો દાદાનો સર્વ-સમર્પણભાવ.

અનેક આકરી કસોટીમાંથી આ વિશ્વાસુ ભક્ત પાર ઊતર્યા. કપરી મુશ્કેલીઓમાં પણ દાદાખાયરને રંજ ન થયો. શ્રીહરિ જે કરતા હશે તે સારા માટે જ કરતા હશે - એવું સમજણ-બળ દાદાખાયરની આગવી વિશેષતા હતી. દાદાખાયરની આવી પ્રેમલક્ષણા ભક્તિથી વશ થઈને ભગવાન સ્વામિનારાયણ તેમના દરબારમાં ૩૦ વર્ષ રહ્યા ને ત્યાં મંદિર કર્યું. આવા યુવાન ભક્તરાજ દાદાખાયર સત્સંગમાં સદાયને માટે સમર્પણની અદ્વિતીય પ્રેરણામૂર્તિ રહ્યા છે.

ભગવાન સ્વામિનારાયણના આવા અનેક મહાન યુવાન ભક્તોની એક અખૂટ મોતીમાળા ઈતિહાસના પાને પાને સચવાયેલી પડી છે. ભગવાન સ્વામિનારાયણ પછી તેમની આધ્યાત્મિક અનુગામી ગુરુપરંપરામાં દરેક મહાપુરુષના જીવનમાં પણ સમર્પણની એ અદ્વિતીય આભા આજપર્યંત નીરખી શકાય છે.

સ્વામિનારાયણીય અસ્મિતાની ગૌરવગાથા ગાતા એ યુવાનોના આધ્યાત્મિક સમર્પણમાંથી પ્રેરણા લઈએ એ જ એમને આપણી સાચી ભાવાંજલિ બની રહેશે. ♦

: કાવ્ય :

થનગન કરતી આવી યુવાની

- જિગર દેસાઈ
(એમ.બી.એ., મુંબઈ)

આજ થનગન કરતી આવી છે યુવાની.
મસ્ત ગગનના પંખીડાની જેમ ઊડતી એ રહેવાની,
અનંત મહત્વાકાંક્ષાઓ જીવનમાં એ ભરવાની,
ધ્યાન દઈને સાંભળો મિત્રો શું એ કહેવાની...

મિત્ર મોજ ને મસ્તી એ લાવવાની,
આગળ વધવાનો જોમ એ જીવનમાં ભરવાની.
ભણતરનું મહત્ત્વ એ આપણને સમજાવવાની,
ને શિખર પર પહોંચવાનો ધ્યેય બાંધી આપવાની.

આજ મળી છે આપણને તક આધ્યાત્મિકતાની,
જેની રાહ પર આપણે દોટ છે મૂકવાની.
આવી છે ઉંમર સ્વામિનારાયણ મંત્ર જપવાની,
ને ગુરુ-આજ્ઞામાં ટૂંક ટૂંક થવા આવી આજ યુવાની.

ષષ્ટીપૂર્તિ વર્ષની મોજ છે માણવાની,
નિયમોની દૃઢતા જીવનમાં છે ઉતારવાની,
અભાવ અવગુણની વાત છે સર્વે ત્યજવાની,
ને માયા મૂકી સત્સંગ કરવો એ રીત ગુરુ રીઝવવાની.

ઈચ્છા છે બી.એ.પી.એસ.ના આદર્શ યુવક બનવાની,
ને આધ્યાત્મિકતાની મહેક ચારેકોર પ્રસરાવવાની.
મન કર્મ વચને ગુરુ પ્રમુખસ્વામીને પૂજવાની,
થનગન કરતી આજ આવી છે યુવાની...

યૌવનનું નૂર નૈતિકતા

- પ્રફુલ્લ નારોલા (બી.કોમ., સુરત)

- સંજય બગડિયા (સેલ્સ એક્ઝિક્યુટિવ, સુરત)

- પ્રિયંક લી. પટેલ (ઇ.સી. એન્જિ.ફાઇનલ, સુરત)

ગુલાલ ઊડી રહ્યો છે, લોહીમાં શરણાઈ વાગે છે.

નવું કંઈક તમારા જીવનમાં અવતરવાની ઉંમર છે.'

યૌવન એટલે તરવરાટ...

યૌવન એટલે જીવનનો સુવર્ણકાળ...

યૌવન એટલે આપણને સૌને ભગવાને આપેલી અમૂલ્ય તક...

યૌવન એટલે પરિવર્તન અને નવસર્જનનું બીજું નામ...

યૌવન એટલે આભના તારલાઓ તોડીને ગળામાં સિદ્ધિઓ રૂપે પહેરવાનો અવસર...

યૌવન એટલે કંટકો ભરેલા વેરાન રસ્તાને આંખના પલકારામાં વીંધી નાંખતી ગતિ...

યૌવન માત્ર ઉંમરથી જ નહીં, પરંતુ તેના ચેતનવંતા જોમથી મપાય છે. જેની પાસે અપાર અને અમાપ શક્તિ છે, વિદ્યુત કરતાં વેગવાન વિચારો અને નિર્ણયો છે, એ નિર્ણયોને પૂર્ણ કરવા માટે રોમરોમમાં ચેતન અને તાકાત છે, પ્રયંસ આત્મવિશ્વાસ છે - એ છે યૌવનની ખરી ઓળખ.

પરંતુ સિદ્ધિઓના શિખરે જઈને ગૌરવથી છલકાતા યૌવનની ખરી ગરિમા એ સિદ્ધિઓમાં નથી, તેણે કરેલા ગૌરવવંતાં કાર્યોમાં નથી, યૌવનના બળવંતા જોમ અને તરવરાટમાં નથી. યૌવનની ખરી ગરિમા તેનાં મૂલ્યોમાં છે.

યૌવન એટલે એ મૂલ્યો માટે અડીખમ ઊભી રહેતી તાકાત.

યૌવન એટલે એ મૂલ્યોની પ્રતિષ્ઠા માટે લડતું જોમ.

ક્યાં છે અને કેવાં છે એ મૂલ્યો ?

જેનાથી યૌવન ઝળકી ઊઠે, મહેકી ઊઠે એવાં એ અનેક મૂલ્યોની ભાતીગળ રંગોળીમાં પહેલું મૂલ્ય છે નૈતિકતાનું.

નૈતિકતાના દુષ્કાળ વચ્ચે જીવતી આજની દુનિયામાં યુવાનો એક ચમત્કાર સર્જી શકે છે. યુવાન ધારે તો પોતાની જાતને તો બદલી જ શકે, પરંતુ આખા વિશ્વને નૈતિકતાના નૂરથી પ્રકાશમાન કરી શકે છે.

પણ શું છે નૈતિકતા ? શું છે નૈતિકતાનું નૂર ?

નૈતિકતા એટલે નીતિ, સદાચાર, પ્રામાણિકતા, સત્ય, ન્યાય ફરજ પ્રત્યે સભાનતા, વફાદારી વગેરે ગુણોથી અલંકૃત જીવન. ચોરી, ભ્રષ્ટાચાર, વ્યભિચાર અને વ્યસનોથી જોજનો દૂર એક સુંદર જીવન.

નૈતિકતાનો આધ્યાત્મિકતા સાથે સીધો અને ગાઢ સંબંધ છે. અધ્યાત્મ વિનાની નૈતિકતાથી કોઈ ફળશ્રુતિ મળતી નથી.

યુવાનીમાં નૈતિકતાનું નૂર ખીલી ઊઠે તો યૌવન સાર્થક થઈ જાય. એક નવયુવાન અબ્રાહમ લિંકન, એક નવયુવાન મોહનદાસ ગાંધી કે એક નવયુવાન સરદાર વલ્લભભાઈની નૈતિકતાએ કેટલા બધાને અજવાળ્યા હતા ! વિશ્વ આજેય તેની ગાથા ગાય છે. અને એમાંય નૈતિકતાનો એક ગુણ પ્રામાણિકતા તો યૌવનનો મહામૂલો શણગાર બની જાય. તેનાથી ન કેવળ યુવાન, પરંતુ તેનો પરિવાર, સમગ્ર સમાજ, દેશ અને વિશ્વ પણ ઝળહળી ઊઠે છે.

પ્રામાણિકતાના નૂર વિના દેશમાં, સમાજમાં, કુટુંબમાં, ભાઈ ભાઈ વચ્ચે, પતિ-પત્ની વચ્ચે, નોકરીમાં કે ધંધામાં, વિદ્યાર્થી જીવનમાં કેવા ગંભીર પ્રશ્નો સર્જાય છે તે જગજાહેર છે.

પ્રામાણિકતાના લાભની અસર ભલે ત્વરિત ન દેખાય, પરંતુ તેનું અંતિમ પરિણામ સંતોષજનક હોય છે, સુખદાયક હોય છે.

કેટલાક યુવાનો કહે છે, '૨૧મી સદીમાં પ્રામાણિક રહીને મારે ભૂખે નથી મરવું.'

પરંતુ બીજી બાજુ એવા પણ અનેક યુવાનો છે કે જે પોતાના પ્રાણના ભોગે પોતાની પ્રામાણિકતા છોડવા તૈયાર નથી. કપરા સંજોગો તેમને ડરાવી શકતા નથી, સત્તા કે સંપત્તિની શેહ-શરમ તેમને નડતી નથી. કાદવમાં કમળ ખીલે, વાદળછાયા વાતાવરણમાં મેઘધનુષ નીકળે તેમ તેમની પ્રામાણિકતાનો રંગ કપરા સંજોગો વચ્ચે પણ નીખરી ઊઠે છે.

બીજી તરફ એ પણ એક હકીકત છે કે અપ્રામાણિકતાનું પાપ ક્યારેય કોઈનેય છોડતું નથી.

એક જૂની બોધકથા અહીં યાદ આવે છે.

એક રાજા એક વાર વેશપલટો કરીને રાત્રે નગરમાં ફરવા નીકળ્યા. રસ્તામાં એક ચોર મળ્યો. રાજાએ પૂછ્યું, 'તું કોણ છે ?' ચોરે કહ્યું, 'હું ચોર છું.' રાજાએ કહ્યું, 'હું પણ ચોર છું. ચોરી માટે નીકળ્યો છું.' બંને સંખ્યા. રાજમહેલમાં ગયા. ખજાનો ફોડ્યો. સોનામહોરોથી ભરેલા દસ દેગડામાંથી ચાર દેગડા ચોરી લીધા. જંગલમાં જઈ ખાડો કરી સંતાડી દીધા. ત્રણ દિવસ પછી એ જ જગ્યાએ ફરીથી રાત્રે મળવાનું નક્કી કરી બંને છૂટા પડ્યા.

સવારે વાત ઊડી, 'રાજાનો ખજાનો લૂંટાયો...' રાજાએ પ્રધાનને તપાસ કરવા મોકલ્યા. પ્રધાને જોયું કે હજુ છ દેગડા પડ્યા છે. તેમાંથી તેણે ચાર

લઈ લીધા ને જાહેર કર્યું કે, ‘રાજાજી ! દસ દેગડામાંથી ફક્ત બે જ દેગડા બચ્યા છે.’ રાજા કહે, ‘તપાસ કરો. ચોરને પકડો. ઢંઢેરો પીટાવો કે જેણે ચોરી કરી હોય તે જો કબૂલ કરશે તો રાજા તેને માફ કરશે.’ પ્રધાન કહે, ‘રાજાજી ! ચોર કદી એમ કહે કે હું ચોર છું ?’ પરંતુ રાજાએ આગ્રહ રાખ્યો અને ઢંઢેરો પીટાવ્યો. સૌના આશ્ચર્ય વચ્ચે ચોર હાજર થયો. તેણે ચાર દેગડા ચોર્યાની વાત પ્રામાણિકતાપૂર્વક કબૂલી લીધી. પણ બીજા ચાર દેગડા ક્યાં ગયા ? રાજાએ તેની તપાસ કરવા માટે પ્રધાનને આદેશ આપ્યો. પ્રધાને કહ્યું, ‘રાજાજી ! આ ચોરે જ બધા દેગડા લીધા છે. બીજા કોણ લે ?’ ચોરે કહ્યું, ‘જિંદગીમાં હું કદી જૂઠું બોલ્યો નથી.’ ચોરની પ્રામાણિકતાનું નૂર માત્ર રાજા નહીં, પરંતુ સૌને સ્પર્શી ગયું. રાજા તો આ ચોરીના સાક્ષી પણ હતા. અંતે રાજાએ પ્રધાનના ઘરે જ જડતી લેવાડાવી તો ચાર દેગડા ત્યાંથી નીકળ્યા. રાજાએ તેને સજા કરી પ્રધાનપદેથી ઉતારી મૂક્યો અને દેશનિકાલ કર્યો. પેલા પ્રામાણિક ચોરને પ્રધાનપદે બેસાર્યો.

પ્રામાણિકતા એક હિન માનવીને પણ કેવું ગૌરવ અપાવે છે અને અપ્રામાણિકતા ટોચ પર બેઠેલા માણસને કેવો પ્રતિષ્ઠાહીન કરે છે ! તે સમજવા માટે આ ઉદાહરણને અનુરૂપ આધુનિક દૃષ્ટાંતો પણ ક્યાં ઓછાં છે !

૨૧મી સદીના ઝડપી પરિવર્તનના યુગમાં દિન પ્રતિદિન સ્વાર્થવૃત્તિ વધતી જાય છે. અને તે સ્વાર્થવૃત્તિ જ માણસમાં પ્રામાણિકતાનો ગુણ વિકસવા દેતી નથી. થોડા સ્વાર્થની લાલચ પ્રામાણિકતાને નેવે મૂકી દેવા મજબૂર કરે છે. એટલે જ પ્રધાનથી માંડી પટાવાળા સુધી અને કારકૂનથી માંડી કલેક્ટર સુધી લગભગ કોઈ પણ વ્યક્તિ અણીશુદ્ધ પ્રામાણિક વ્યક્તિ દુર્લભ બન્યા છે. હા, કેટલાક અપવાદો જરૂર હોય છે. જે યુવાનો ચટ્ટાન જેવા હોય છે, આંધીઓ તેમને ઉડાડી શકતી નથી અને ઊધઈઓ તેમને કોરી શકતી નથી. ભારત આજેય એવા યુવાનોથી ગૌરવવંતું છે.

વાત છે એવા એક યુવાનની. રાજકોટ જિલ્લાના ‘જિલ્લા પ્રાથમિક શિક્ષણ સમિતિ’માં હિસાબી અધિકારી તરીકે ફરજ બજાવતા એક યુવાનની. સન ૨૦૦૫ની એક સાંજે એક વેપારી સંસ્થાના માણસો તેમની ઓફિસમાં એક સરકારી યોજના લઈને આવ્યા. તેમણે એક સરકારી યોજના પાર પાડવા એ યુવાનને લાખો રૂપિયાની ખૂબ મોટી લાંચ લેવા આગ્રહ કર્યો. જો કે તેમાં સરકારને તો કરોડો રૂપિયાનું નુકસાન જવાનું હતું, પરંતુ એ વેપારીઓ તેમાંથી કરોડો કમાવા માંગતા હતા અને એ યુવાનને પણ લાખો રૂપિયાનો ફાયદો થવાનો હતો, પણ આ વાત સાંભળતા જ એ અધિકારી યુવાને ખુમારીથી કહ્યું, ‘જુઓ, હું બી.એ.પી.એસ. સ્વામિનારાયણ સંસ્થાનો, એક સત્સંગી છું, ભગવાન સ્વામિનારાયણ અને મારા ગુરુ પ્રમુખસ્વામી મહારાજનો આશ્રિત છું. તમે મને કોઈ રીતે લાંચ માટે લલચાવી નહીં શકો. દેશને નુકસાન થાય એવું કોઈ સંજોગોમાં હું વિચારી શકીશ નહીં. માટે તમે હમણાં ને હમણાં જ અહીંથી વિદાય થઈ જાઓ.’ આમ કહી એ યુવાને એ લોકોને ઓફિસ બહાર કાઢી મૂક્યા.

પરંતુ થોડાક સમય બાદ જ્યારે એ યુવાન સરકારી અધિકારીને એક અન્ય સરકારી કાર્ય માટે અન્યત્ર જવાનું થયું ત્યારે તેમને જાણ થઈ કે પેલા લાંચ આપવાની વાત કરનારા વેપારી લોકોએ બીજા કોઈકને લલચાવીને પોતાનું કાર્ય સાધી લીધું છે. ઊંડાણપૂર્વક તપાસ કરતાં ખ્યાલ આવ્યો કે આમાં તો સરકારને ૧૪૫ કરોડ રૂપિયાનું નુકસાન જાય તેમ છે. એ યુવાનને આખી રાત ઊંઘ ન આવી. બીજા જ દિવસે ગાંધીનગર જઈને મુખ્ય કચેરીમાં તેની જાણ કરી અને સરકારના ૧૪૫ કરોડ રૂપિયા બચાવ્યા. અલબત્ત, એમ કરવા બદલ તેમને હેરાન કરવાના ખૂબ જ પ્રયત્ન થયા, પરંતુ તેઓ તેમના માર્ગમાંથી સહેજ પણ ચલિત ન થયા. થોડાક સમય પછી આ ગેરરીતિમાં જવાબદાર સ્થાનિક અધિકારીઓને પણ એ યુવાન માટે ગૌરવ થયું, તેમનો રોષ ઊતરી ગયો અને તેમની આગળ પોતાની ભૂલ પણ સ્વીકારી.

એ કાર્યનિષ્ઠ અને પ્રામાણિક યુવાન એટલે બી.એ.પી.એસ. સ્વામિનારાયણ સંસ્થાના એક તરવરિયા કાર્યકર શૈલેશભાઈ સગપરિયા.

આ તો એક સરકારી અધિકારીની વાત થઈ, પરંતુ રોજે રોજનું કમાઈ પેટિયું રળતા યુવાનો પણ પ્રામાણિકતાનું કેવું નૂર દર્શાવી શકે છે ! બારડોલીના એક સામાન્ય રિક્ષાચાલક યુવાન વિનોદ ભંડારીને જ્યારે રૂ. ૧,૫૦,૦૦૦/-ની કિંમતના ૧૪૦૦ કેરેટના હીરાનું પડીકું રસ્તામાંથી મળ્યું ત્યારે તેમણે મૂળ માલિકને ઘરે જઈને પરત કર્યું. એ હીરાના પેકેટના માલિકો હીરા કરતાંય વધારે નૂરથી ઝળહળતા એ યુવાન સમક્ષ અહોભાવથી લળી પડ્યા.

આવા તો એક નહીં પણ અનેક યુવકો છે કે જેઓ પ્રામાણિકપણે રહી અન્ય માટે આદર્શ બન્યા છે. કોઈ ધંધામાં તો, કોઈ નોકરીમાં તો, કોઈ વિદ્યાર્થી જીવનમાં પ્રામાણિક રહી પોતાનું મસ્તક ઊંચું રાખીને ફરે છે.

બી.એ.પી.એસ. સ્વામિનારાયણ ગુરુકુળમાં બારમા ધોરણમાં ભણતા ધર્મશ ઘાડિયા તેમજ વિશાલ પંડ્યા, શ્રવણ બગથરિયા વગેરે ગુરુકુળના અન્ય વિદ્યાર્થીઓને અન્યત્ર એક કેન્દ્રમાં બોર્ડની ફાઈનલ પરીક્ષા આપવા જવાનું થયું. પ્રશ્નપત્ર ખૂબ અઘરું હતું અને એવામાં સુપરવાઈઝરે સામેથી ચોરી કરવાનો આગ્રહ કર્યો ! જો કે બીજા પરીક્ષા ખંડોમાં ખૂબ છૂટથી સૌ ચોરી કરી રહ્યા હતા. છતાં ધર્મશ અને તેની સાથેના ગુરુકુળના એ બધા જ વિદ્યાર્થીઓએ ચોરી કરવાની ના પાડી એટલું જ નહીં, આ વિદ્યાર્થીઓએ સુપરવાઈઝરોને સમજાવ્યું : ‘અમારે તો ચોરી નથી કરવી, પરંતુ તમારેય કોઈને ચોરી કરાવવી ન જ જોઈએ.’

બીજી કશી ભવિષ્યની પરવા કર્યા વગર કેવળ મહેનત અને પ્રાર્થના તથા ભગવાન અને ગુરુહરિમાં શ્રદ્ધા રાખીને પરીક્ષા-ખંડમાં પરીક્ષા આપી રહેલા આ વિદ્યાર્થીઓને પ્રમુખસ્વામી મહારાજે પૂછ્યું હતું : ‘તમારી જોડેના ચોરી કરતા હોય ત્યારે તમે શું કરો ?’

એ વિદ્યાર્થીઓએ કહ્યું, અમે સુપરવાઈઝરને જ કહી દઈએ કે આ બધું બંધ કરાવો. અને ઘણા સુપરવાઈઝરોને તો ખબર જ હોય કે બી.એ.પી.એસ. ગુરુકુળનો કોઈપણ વિદ્યાર્થી ચોરી કરે જ નહીં. એટલે અમને જોઈને તરત જ કહે : ‘તું અક્ષર-પુરુષોત્તમનો જ છે ને ? એટલે તારું ધ્યાન રાખવાની જરૂર જ નહીં !’

પછી પોતાના આ માનસ-સંતાનોની નૈતિકતા પર સ્વામીશ્રી વારી કેમ ન જાય ?! આ સાંભળીને સ્વામીશ્રીએ કહ્યું હતું : ‘તમે લોકોએ બહુ સારી છાપ બેસાડી દીધી. સંસ્થાનું ગૌરવ વધાર્યું. તમે આવી દૃઢતા રાખી તો તમારું ભવિષ્ય પણ સારું જ છે. ચોરી નથી કરી, જૂઠું નથી કર્યું, તો આગળની જિંદગીમાં પણ તમને આ અનુભવ કામ લાગશે. કોઈની શેહમાં દબાયા વગર ‘નહીં એટલે નહીં જ’ આવી દૃઢતા તમે રાખી છે તો રિઝલ્ટ પણ સારું આવશે. મહારાજ બધાની રક્ષા કરે અને જ્યાં જાવ ત્યાં પ્રતિષ્ઠા વધે. નીતિ ને પ્રામાણિકતા હશે તો જ્યાં જશો ત્યાં ભગવાન તમારો જયજયકાર કરશે.’

સ્વામીશ્રીના એ આશીર્વાદથી આજે એમાંથી ૧૧ યુવાનો મેડિકલની ઉચ્ચ શાખામાં શ્રેષ્ઠ કારકિર્દી ઘડી રહ્યા છે.

એક તરફ રોજ ન્યૂઝ પેપર કે ઇલેક્ટ્રોનિક માધ્યમો પ્રામાણિકતાની હોળીથી કાબરચીતરાં બનતાં કોભાંડોથી છલકાતાં જાય છે. અને બીજી તરફ નૈતિકતાના નૂરથી ઝળહળતા યુવાનોની હારમાળા રચાતી જાય છે.

જો યુવાનોનું નૈતિક ઘડતર થાય તો કેટલી બધી સમસ્યાઓમાંથી આપણે અને સમગ્ર દેશ મુક્ત થઈ શકે છે ! નૈતિકતાના નૂરથી ઝળહળતા એવા યુવાનો સિદ્ધિના શિખરે તો જઈ પહોંચે છે, પરંતુ અન્ય અનેકને પણ ત્યાં પહોંચવાની તાકાત આપે છે. એટલું જ નહીં, એવા યુવાનો પર ભગવાન અને પ્રમુખસ્વામી મહારાજ જેવા મહાન ગુણાતીત સત્પુરુષ અંતરની પ્રસન્નતાના મેઘ વરસાવે છે.

સમગ્ર યૌવનની આલમને એવા નૈતિકતાના નૂરથી ભરી દેવાનું જોમ આપણને સૌને મળે એ જ અભ્યર્થના. ♦

3.

યુવા લેખકોની કલમે...

પ્રારબ્ધ યુવાજના: ન પરિત્યજન્તિ

- સુનીલ બોટંગિયા
(બી.એસસી. માઈકો, ડી.એમ.એલ.ટી., રાજકોટ)

કહેવાય છે,

નિર્બળ લોકોમાં માત્ર ઈચ્છા હોય છે,

જ્યારે સફળ વ્યક્તિઓમાં ઈચ્છાશક્તિ હોય છે.

યૌવન એટલે ઈચ્છાશક્તિનો આવિષ્કાર કરવાનો અનન્ય અવસર.

ઈચ્છાશક્તિ વિનાનો યુવાન એટલે અકાળે વૃદ્ધ બનેલો માનવી.

ખરેખર ઈચ્છાશક્તિ કેળવીને જીવનમાં સફળતા પ્રાપ્ત કરવાની સોનેરી તક હોય તો એ છે યુવાવસ્થા. પરંતુ એ માટે હૈયામાં જોઈએ સાહસનું બળ, શૌર્યની તાકાત.

યુવાનોમાં રહેલી આ સ્વાભાવિક સાહસવૃત્તિ અને શક્તિને પંક્તિબદ્ધ કરતાં રાષ્ટ્રીય શાયર ઝવેરચંદ મેઘાણીએ કહ્યું છે :

‘ઘટમાં ઘોડા થનગને, આતમ વીંઝે પાંખ,
અણદીઠેલી ભોમ પર યૌવન માંડે આંખ.’

વિશ્વના ઇતિહાસ અને વર્તમાન પર નજર કરતાં ખ્યાલ આવે છે કે વિશ્વના કોઈપણ દેશના વિકાસમાં સાહસ અને શૌર્યથી છલકાતા તરવરિયા યુવાનોનો સિંહફાળો રહ્યો છે. અનેક અરમાનો-સ્વપ્નાંઓ-કલ્પનાઓને વાસ્તવિકતામાં બદલી શકવાનો આત્મવિશ્વાસ અને સામર્થ્ય ધરાવતી યુવાપેઢી માટે જ કદાચ કહેવાયું હશે -

‘મેઘધનુષ પર ચાપ ચડાવી દૂર દિગંતે તાકે,
સાગરનાં મોજાં પર ચડી અગણિત રસ્તા આંકે,
ઝાકળને ઝરણું થવાની ઊપડે અગનપિપાસા,
આ અજબગજબની આશા, આ અજબગજબની આશા.’

આ સ્વખતુલ્ય આશાઓને વાસ્તવિકતામાં ફેરવવામાં જેમણે સફળતા પ્રાપ્ત કરી છે, અનેક વિકટ સંજોગોમાં પણ વિશિષ્ટ ગુણોને લઈને સંજોગો સામે લડ્યા છે તેવા યુવાનોની વિશેષતાનો આજે વિચાર કરીએ.

■ સતત કંઈક નવું કરવાનો ઉત્સાહ :

શેખાદમ આબુવાલાએ યુવાનોમાં રહેલા આવા ઉત્સાહને જોઈને કહ્યું છે,

‘ઉમંગો છે સાથી, સપનાં છે મિત્રો,
આંખોમાં છે રંગીન મોસમનાં ચિત્રો,
સરળતાથી ચાલીશું મુશ્કેલ પંથે,
અમને અમારી યુવાની ગમે છે.’

૨૪ ફેબ્રુઆરી, ૧૯૫૫ના દિવસે કુંવારી માતાના પેટે જન્મ લેનાર, તરછોડાયેલ, તેમજ સાવ ગરીબ, મધ્યમ કુટુંબમાં દત્તક લેવાનાર સ્ટીવ જોબ્સને ફી ન ભરી શકવાને કારણે કોલેજ છોડવી પડેલી, ગુજરાન માટે નાની મોટી નોકરીઓ કરવી પડી, અને જે દિવસોમાં તેને ભોજનનાં પણ ફાંફાં હતાં, એવા સંજોગો વચ્ચે માત્ર ૧૯ વર્ષની ઉંમરે સ્ટીવે ટેકનોલોજીની દુનિયાનું સ્વપ્ન જોયું. અને કેવી રીતે એ સ્વપ્ન થયું સાકાર ? તેના જવાબરૂપે સ્ટેન્ફર્ડ યુનિવર્સિટીના પદવીદાન સમારોહમાં તેણે આપેલું વક્તવ્ય જગવિખ્યાત છે. તેમાં સ્ટીવે કહ્યું હતું, “કોઈપણ આધાર વગર, મુશ્કેલીના ભયાનક સમયે પણ ‘કંઈક કરવું છે’ એવો સતત વિચાર મને આવતો.” આ કંઈક કરવાના વિચારથી જ સ્ટીવ જોબ્સે સમગ્ર વિશ્વને એપલ કંપનીની અને મેકિન્ટોશ કોમ્પ્યુટર, આઈફોન, આઈપોડ, આઈપેડ ટેબ્લેટ જેવી અણમોલ ભેટ આપી. ૫૬ વર્ષની જિંદગી જીવનાર સ્ટીવ જોબ્સે ટેકનોલોજીનું સ્વપ્ન જોયું અને તેના માટે સતત કંઈક નવું કરતા રહી માત્ર લોકોની જિંદગી નહીં, પરંતુ આખું ઈન્ફર્મેશન-વિશ્વ બદલી નાખ્યું.

સ્વાદુપિંડનું કેન્સર થયું તેવા સંજોગોમાં પણ નાસીપાસ થયા વગર સ્ટીવ હિંમતભેર ઉચ્ચારતા, ‘ધારો કે આજે જ મારી જિંદગીનો છેલ્લો દિવસ હોય તો, હું એવું શું કરું કે જેથી તે મારું શ્રેષ્ઠ પ્રદાન બની રહે?’

‘મનમાં ઓછું લાવીએ શી વાતનું ?

જિંદગી છે જ નામ ઝંઝાવાતનું.’

ઈન્ફોસીસ કંપનીના સ્થાપક નારાયણમૂર્તિ કહે છે, ‘To achieve something which we never had before, we need to do something which we have never done before better.’ અર્થાત્ પહેલાં ક્યારેય ન મેળવ્યું હોય તેવું કંઈક આગવું મેળવવા માટે આપણે ક્યારેય મહેનત ન કરી હોય તેવી બહેતર મહેનત કરવી પડે.

■ અચળ આત્મવિશ્વાસ :

સફળતા રાતોરાત મળતી નથી. તેમાં પણ અનેક વિઘ્નો, મુશ્કેલીઓ આવ્યાં જ હોય છે, પરંતુ કહેવાય છે ને -

‘અચલ રહા જો અપને પથ પર, લાખ મુસીબત આને પે,
મિલી સફલતા જગ મેં ઉસકો, જીને મેં મરજાને મેં.’

વિપરીત સંજોગોની વચ્ચે પણ પોતાના લક્ષ્ય અને કાર્યમાં જો આત્મવિશ્વાસ અકબંધ રહે તો સફળતા હાથવેત હોય છે.

શું તમે માની શકો કે આખા શરીરમાં એક આંગળી સિવાય કોઈ અંગ સાથે ન આપતું હોય એવી વ્યક્તિ પણ વિજ્ઞાનની દુનિયામાં ટોચ પર જઈને બેસી શકે ? વિશ્વની ભેજાબાજ વ્યક્તિઓને પણ માંડમાંડ સમજાય એવી કાળ અને જગતની ઉત્પત્તિની થિયરી આપનાર એ વિજ્ઞાનીને આજે વિશ્વ ‘World's greatest mind’નું બિરુદ આપે છે. નામ છે - સ્ટીફન હોકિંગ્સ. માત્ર ૪ વર્ષની ઉંમરે ચેતાતંત્રના ભયાનક રોગ ‘ALS’ને લીધે મોતના મુખમાં જઈ પહોંચ્યા. સામાન્ય રીતે આવા કેસમાં વ્યક્તિ ૩ થી ૪ વર્ષમાં મૃત્યુ પામે, પણ સ્ટીફન બચી ગયા, પરંતુ જીવતાં મડદા જેવી દશા. શરીરની કોઈ ક્રિયા જાતે ન કરી શકે, બોલી પણ ન શકે. ગળામાં એક નળી નાંખી શ્વાસ લે અને બીજી નળીમાંથી જમે, એવું મરણતોલ જીવન !

આટલી બધી તકલીફો વચ્ચે પણ સ્ટીફન હોકિંગ્સે વ્હીલચેરમાં પોતાના સાચા મિત્ર સમી એક આંગળી વડે ‘A Brief History of time’ નામનું ફિઝિક્સનું પુસ્તક લખ્યું, જેની કરોડો કોપીઓ વેચાઈ. એટલું જ નહીં વિજ્ઞાનની અદ્વિતીય શોધો સ્ટીફનના ખાતે જમા થઈ ગઈ. કારણ કે, ‘ALS’નો રોગ એ તેના શરીરને જ થયો હતો, પરંતુ તેના અતૂટ આત્મવિશ્વાસને નહીં !

‘જીવનમેં કુછ કરના હૈ તો મનકો મારે મત બૈઠો

અગર આગે બઢના હૈ તો હિંમત હારે મત બૈઠો.’

વિપત્તિઓનો વંદોળ હોય કે આફતોનો વરસાદ હોય, શારીરિક મુશ્કેલીઓ હોય કે આર્થિક કટોકટી, તેની વચ્ચે પણ જેણે આત્મવિશ્વાસ ગુમાવ્યા વગર હિંમત રાખી અને તમામ પડકારોનો સામનો કર્યો હોય તેઓ જ જીવનમાં કંઈક સિદ્ધિ મેળવી શક્યા છે.

અત્યંત ગરીબી વચ્ચે, ૧૬ વર્ષની નાની ઉંમરે ટી.બી.ના રોગનો ભોગ બનનાર રામાનુજે અત્યંત કઠિન લાગતા વિષય ગણિતમાં અદ્ભુત સંશોધન કર્યું એટલું જ નહિ, પરંતુ પોતાની શારીરિક મુશ્કેલીઓની વચ્ચે પણ ૬,૦૦૦ પ્રમેયો સિદ્ધ કરી અદ્ભુત સફળતા પ્રાપ્ત કરી જગતભરમાં ભારતનું ગૌરવ વધાર્યું.

જેને નાની ઉંમરે સંપૂર્ણપણે કાનની બહેરાશ આવી ગયેલી એવા બીથોવને સંગીતની શ્રેષ્ઠ રચનાઓ ‘symphony’ રચીને સંગીતના શહેનશાહનું બિરુદ મેળવ્યું ! તેમણે રચેલી સંગીત સ્વરમાલિકાઓ - સીમ્ફની આજે જગમાં સર્વ શ્રેષ્ઠ અને અજોડ ગણાય છે. શરીરની મર્યાદા હોવા છતાં પણ આત્મ-વિશ્વાસ અને રસ-રુચિના આધારે સમગ્ર વિશ્વને શ્રેષ્ઠ સંગીતની ભેટ આપી છે. આત્મવિશ્વાસથી ભરપૂર આવી વ્યક્તિઓ માટે કોઈકે લખ્યું છે,

‘બાધાએં કબ બાંધ સકી હૈં, આગે બઢનેવાલે કો,

વિપદાએં કબ રોક સકી હૈં, પથ પર ચલનેવાલે કો.’

■ સખત અને સતત પુરુષાર્થ :

અશક્યને શક્ય બનાવી સિદ્ધિની ઝંખના કરનારા તો આ દુનિયામાં કરોડો લોકો છે. છતાં આ સફળતા સૌ કોઈને કેમ પ્રાપ્ત થતી નથી ? તેના કારણમાં કહી શકાય,

‘પરસેવાએ પ્રબળ રસાયણ થઈને, સઘળે રેલાવું પડશે,

ભલે ભાગ્યરેખા હોય વજ્રસમ, તેને પણ ભૂંસાવું પડશે.’

સતત કંઈક નવું કરવાનો ઉત્સાહ અને દૃઢ આત્મ-વિશ્વાસમાં જો પ્રચંડ પુરુષાર્થ ભળે તો અશક્ય લાગતાં કાર્ય પણ શક્ય બને છે. આઠ વર્ષની નાની ઉંમરે અકસ્માતમાં ડાબા પગના તમામ આંગળાઓ ગુમાવી બેસનાર યુ.એસ.એ.ના ગ્લેન કનિંગહામને જોઈ ડોક્ટરે તેનાં માતા-પિતાને તો ત્યાં સુધી કહી દીધું કે, ‘ગમે તેટલી સારવાર કરીએ તોપણ હવે એ કદી ચાલી શકશે નહીં.’

પગમાં અસહ્ય દુખાવો અને પાર વિનાની બળતરા થતી હોવા છતાં, ‘હું બધાને બતાવી આપીશ કે જુઓ હું પણ કેવું ચાલી શકું છું...!’ એવા આત્મવિશ્વાસ સાથે ગ્લેને પ્રચંડ પુરુષાર્થ કર્યો અને કોઈ પણ કાર્યને દોડીને કરવાની ટેવ પાડી. તેના આધારે સ્કૂલમાં યોજાતી નાની મોટી હરીફાઈઓમાં પણ તે ભાગ લેવા માંડ્યો. એટલું જ નહીં, સતત પુરુષાર્થથી તે શાળા કક્ષાએ વિજેતા બનવા લાગ્યો. માત્ર ૧૯ વર્ષની ઉંમરે તેણે મોટી સ્પર્ધાઓમાં ઝંપલાવ્યું.

૧૯૩૪માં કેન્સાસ યુનિવર્સિટીની સ્પર્ધામાં ૪.૩૬ મિનિટમાં એક માઈલનું અંતર કાપી વિશ્વવિક્રમ સર્જ્યો.

૧૯૩૬માં બર્લિનમાં યોજાયેલી ઓલિમ્પિક સ્પર્ધામાં ૧૫૦૦ મીટરની દોડ ૩ મિનિટ અને ૪૮.૪ સેકન્ડમાં પૂરી કરી રૌપ્ય ચંદ્રક મેળવ્યો.

૧૯૩૮માં માત્ર ૪ મિનિટ અને ૪ સેકન્ડમાં એક માઈલનું અંતર કાપી જે વિશ્વવિક્રમ બનાવ્યો તે વર્ષો સુધી અતૂટ રહ્યો.

જિંદગીમાં કદી પણ જાતે ચાલી ન શકે તેવી ગંભીર ઈજા પામનાર ગ્લેન કનિંગહામ રમતના મેદાનની સાથોસાથ અભ્યાસમાં પણ આગળ રહ્યો. મહેનત મજૂરી કરતાં કરતાં તેમણે એમ.એ. અને પીએચ.ડી.ની ડિગ્રી મેળવી તેમજ આગળ જતાં યુનિવર્સિટીના ડાયરેક્ટરનું પદ પણ મેળવ્યું. એટલું જ નહીં ૧૯૩૮માં વિશ્વયુદ્ધ સમયે લશ્કરમાં જોડાયો, ૭ વર્ષ સુધી દેશસેવા કરી, ત્યારબાદ એક ખેતર ખરીદીને એની આવકમાંથી અપંગો માટે આશ્રમ ખોલ્યો. જેમાં ૮,૦૦૦ જેટલા અપંગ બાળકોને આપબળે જીવતાં શીખવ્યું.

માત્ર અપંગો જ નહિ, પરંતુ પોતાના સતત-સખત પુરુષાર્થના આધારે નખશિખ સાજા એવા યુવાનો માટે ગ્લેન કનિંગહામ એક રોલ મોડલ બની ગયો.

આવા પ્રયંડ પુરુષાર્થને કારણે જ ભારતના લોખંડી પુરુષ સરદાર વલ્લભભાઈ પટેલે પહુડ રજવાડાંઓને સંગઠિત કરવાનું ધ્યેય પાર પાડી ભારતને અખંડ રાષ્ટ્રનો દરજ્જો અપાવ્યો.

■ નિષ્ફળતાથી ડરતા નથી :

ઉચ્ચ ધ્યેય સાથે શરૂ કરેલા કાર્યમાં ક્યારેક વિઘ્નો પણ આવે, અને કદાચ નિષ્ફળતા પ્રાપ્ત થાય, છતાં તેની સામે હિંમત રાખી સતત પ્રયત્ન કરવામાં આવે તો ચોક્કસ સફળતા મળે છે.

પરંતુ મોટે ભાગે કાર્યના આરંભ પહેલાં જ લોકો નિષ્ફળતાના ડરને કારણે કાર્યની શરૂઆત જ નથી કરતા અને કદાચ શરૂઆત કરે તો વચ્ચેથી પડતું મૂકી દેતા હોય છે. એક અંગ્રેજી સૂક્તિ યથાર્થ કહે છે : 'Don't fear facing failure in the first attempt, because even successful maths starts with zero.'

યુ.એસ.એ. અને વિશ્વમાં જેમનું નામ આદરપૂર્વક લેવાય છે તેવા અમેરિકન રાષ્ટ્રપ્રમુખ અબ્રાહમ લિંકને જીવનની સફળતાની શરૂઆત ઘણી બધી નિષ્ફળતાઓનાં પગલાંથી કરી હતી.

- સન ૧૮૩૧માં ૨૨ વર્ષની ઉંમરે બિઝનેસમાં નિષ્ફળતા.
- ૨૩ વર્ષે વિધાનસભાની ચૂંટણીમાં હાર.
- ૨૪ વર્ષે ફરીથી ધંધા માટે પ્રયત્ન, ફરી નિષ્ફળતા.
- ૨૬ વર્ષે પત્નીનું મૃત્યુ, માનસિક આઘાત.
- ૨૭ વર્ષે અનેક મુશ્કેલીઓને કારણે માનસિક તણાવ.
- ૨૮ વર્ષે અધ્યક્ષની ચૂંટણીમાં ચૂંટાવાની તક ન મળી.
- ૩૧ વર્ષે ઈલેક્ટરની ચૂંટણીમાં જીતની આશા ન ફળી.
- ૩૪ વર્ષે કોંગ્રેસના સભ્યપદની ચૂંટણીમાં પણ હાર.
- ૩૮ વર્ષે ફરીથી કોંગ્રેસના સભ્યપદની ચૂંટણીમાં હાર.
- ૪૬ વર્ષે સેનેટની ચૂંટણીમાં પણ સેટ ન થઈ શક્યા.
- ૪૭ વર્ષે ઉપરાષ્ટ્રપતિની ચૂંટણીમાં હાર્યા.
- ૪૮ વર્ષે સેનેટની ચૂંટણીમાં નિષ્ફળતા.

આવી બાર-બાર આઘાતજનક નિષ્ફળતા મળી છતાં તેમના દૃઢ મનોબળ અને પુરુષાર્થને પરિણામે સન ૧૮૬૦માં ૫૧ વર્ષે યુ.એસ.એ.ના સૌથી વધુ લોકપ્રિય રાષ્ટ્રપ્રમુખ બન્યા.

આટલાં વિઘ્નોથી પરાસ્ત થવાં છતાં લિંકન પ્રયત્ન કેમ ચાલુ રાખી શક્યા ? તેની પાછળ એમનો સતત વિચાર રહેતો કે, 'It is a slip, not a fall.' માત્ર પગ લપસ્યો છે, આ મારી હાર નથી.

રાત્રીને પણ દિવસની જેમ જાગતી કરવા વિદ્યુત બલ્બની શોધમાં મથેલા વિજ્ઞાની એડિસન ૯,૯૯૯ પ્રયત્નોમાં નિષ્ફળ ગયા. છતાં નાસીપાસ થયા વગર પ્રયત્ન ચાલુ રાખ્યા અને ૧૦,૦૦૦મા પ્રયોગે દુનિયાને વિદ્યુતબલ્બની ભેટ આપી.

■ ભગવાનમાં અનન્ય શ્રદ્ધા :

નિષ્ફળતાને કારણે હતાશ-નિરાશ થવાને બદલે ભગવાનમાં શ્રદ્ધા ધરાવનારને અંતે અવશ્ય સફળતા મળે છે.

પૂર્વ રાષ્ટ્રપતિ ડૉ. એ.પી.જે. અબ્દુલ કલામે પોતાના પુસ્તક 'અગનપંખ'(Wings of Fire)માં કહ્યું છે કે, 'મેં હંમેશા ભગવાન સાથે કામના સંજોગોમાં ભાગીદારી રાખી છે. મને પૂરેપૂરો ખ્યાલ હતો કે શ્રેષ્ઠ કામ કરવા માટે મારી શક્તિ ઉપરાંત ભગવાનની સહાય જરૂરી છે. હું મારી શક્તિનો અંદાજ કાઢતો, ત્યારબાદ ભગવાનના હાથમાં મારી જાતને સોંપી દેતો. આ ભાગીદારીમાં મને જરૂરી હોય તે બધી જ શક્તિ હું મેળવતો અને હકીકતે હું ભગવાનની તે દિવ્ય શક્તિને મારામાં અનુભવી શકતો. આજે હું પૂરા વિશ્વાસ સાથે કહી શકું કે આપણાં ધ્યેયો સિદ્ધ કરવા માટે ભગવાન જ આપણામાં શક્તિ સ્વરૂપે હાજર હોય છે.'

બરેબર, કોઈપણ કાર્ય જો ભગવાનમાં શ્રદ્ધા રાખી એમના બળે કરવામાં આવે તો તેમાં સફળતા પ્રાપ્ત થાય જ છે. એટલે જ અનુભવીઓ કહે છે :

When you start your day, keep 3 words in mind :

Try - for a better future.

True - in your work.

Trust - In God.

આ વિચારનું શ્રેષ્ઠ જીવંત ઉદાહરણ છે પ્રમુખસ્વામી મહારાજ. જીવનમાં પ્રત્યેક પગલે ભગવાનને જ આગળ રાખી અને ભગવદ્-શ્રદ્ધાના જ બળે જ તેઓ તમામ કાર્યો કરી રહ્યા છે. દિલ્હી-ગાંધીનગરનાં અક્ષરધામ પરિસરો, ૮૦૦થી વધારે સંતોની સમાજને ભેટ, દેશ-વિદેશમાં હજાર મંદિરો, બી.એ.પી.એસ.ની અનેકવિધ સેવા-પ્રવૃત્તિઓ, લોકકલ્યાણનાં અનેક પ્રકલ્પો વગેરે અનેક કાર્યો તેઓએ કર્યાં છે, એટલું જ નહીં, તે માટે તેમણે પોતાના શરીરને ઘસી નાખ્યું છે. પરંતુ ભગવાનમાં અનન્ય શ્રદ્ધાને કારણે આ કાર્યોના યશ-ભારથી તેઓ મુક્ત રહ્યા છે. આ શ્રદ્ધાને કારણે જ સફળતા કે નિષ્ફળતા તેઓને વિચલિત કરી શકતી નથી.

સને ૨૦૦૮માં આઈ.સી.આઈ.સી.આઈ.ના સી.ઈ.ઓ. શ્રી કામથને મુંબઈમાં તેઓએ કહેલું, 'ભગવાન કો યાદ કરકે કીયે ગયે કાર્ય સે

જીવનમેં સચ્ચી શાંતિ ઓર અચ્છી સફલતા મિલતી હૈ.’

પરમ પૂજ્ય પ્રમુખસ્વામી મહારાજ કહે છે, ‘અશક્ય લાગતા કાર્યમાં પણ જો ભગવાનની શક્તિ અને આશીર્વાદ પ્રાપ્ત થાય તો તેમાં ચોક્કસ સફળતા પ્રાપ્ત થાય છે. પણ ભગવાનમાં શ્રદ્ધા જોઈએ.’

આપણે પણ આ મહાપુરુષોના જીવનમાંથી પ્રેરણા લઈ તેમણે રાખેલો અભિગમ આપણા જીવનમાં અપનાવીએ અને મનમાં દૃઢતા રાખીએ કે નક્કી કરેલા ધ્યેયને સિદ્ધ કરવું જ છે.

અંતમાં યુવામિત્રોને એટલું જ કહેવાનું,

‘મુશ્કિલોં સે ભાગ જાના આસાન હોતા હૈ,

હર પહલુ જિંદગી કા ઈમ્તિહાન હોતા હૈ,

ડરનેવાલોં કો મિલતા નહીં કુછ જિંદગીમેં,

લડનેવાલોં કે પૈરોં મેં યે જહાન હોતા હૈ.’ ♦

યુવા લેખકોની કલમે...

સાહસિકોની સૃષ્ટિ - યુવા સૃષ્ટિ

- પંકજ વાસાણી (બી.એસસી., કેમિસ્ટ્રી, રાજકોટ)

જ્યાં નિરાશાઓને જાકારો છે, આશાઓને આવકાર છે,
જ્યાં અંધકારને અવકાશ નથી, નિષ્ફળતાનો ડર નથી,
જ્યાં સાહસનું સૌંદર્ય છે અને શૌર્યનો તરવરાટ છે,
એ છે યૌવન ! એ છે યૌવન ! એ છે યૌવન !

હા, યૌવન એટલે સાહસ, સ્વપ્ન સાકાર કરવાનો અવસર.

અમેરિકામાં ટેનેસી શહેરમાં જન્મેલી બિલમા રૂડોલ્ફને ૪ વર્ષની નાની વયે પોલિયો થયો અને અપંગ બની ગઈ. ડોક્ટરોએ કહી દીધું, આ છોકરી કદી જમીન ઉપર પગ રાખી ઊભી નહીં રહી શકે. પરંતુ પોતાના દૃઢ મનોબળ અને સાહસને કારણે તે ધીમે ધીમે ચાલતાં શીખી અને ત્યારબાદ ૧૯૬૦ની ઓલિમ્પિકમાં ભાગ લીધો ને ૧૦૦ મીટર, ૨૦૦ મીટર, ૪૦૦ મીટરની દોડમાં વિશ્વવિજેતા જ્યુટા હેરાને હરાવી ત્રણ ગોલ્ડ મેડલ પ્રાપ્ત કર્યા. ત્યારે તેના સાહસની નોંધ લેતાં ન્યૂઝ-પેપરમાં લખાયું, ‘A paralytic woman became fastest woman on the earth.’

સામાન્ય ખેડૂતના કુટુંબમાં જન્મ લેનાર અને અભ્યાસમાં ‘દ’ એવા સોઈકિરો હોન્ડાનું સ્વપ્ન હતું - વિશ્વના મહાન મિકેનિક બનવાનું. આ સ્વપ્ન સાકાર કરવા માટે ૧૫ વર્ષની વયે કારખાનામાં કામે લાગ્યા. ૨૧ વર્ષની વયે એક ધંધો કર્યો અને તેમાં ભારે નિષ્ફળતા મળી. છતાં હિંમત હાર્યા નહીં. ૩૦ વર્ષની વયે ટેકનિકલ સ્કૂલમાં પ્રવેશ મેળવીને તે જ્ઞાનને આધારે પિસ્ટન બનાવ્યું, પરંતુ વિશ્વયુદ્ધમાં તેઓ પણ બરબાદ થયા. વિશ્વયુદ્ધ બાદ બેઠા થયેલા જાપાનમાં લોકોની અવર-જવર માટે સાઈકલમાં બેટરી લગાડી પ્રથમ મોટર સાઈકલ બનાવી અને ધીમે ધીમે તેમાં સુધારા કરતા રહ્યા અને વિશ્વને પોતાના સાહસ દ્વારા જગવિખ્યાત હોન્ડા કંપનીની ભેટ આપી.

એક સમયે તોફાની વૃત્તિને કારણે જેને સ્કૂલમાંથી કાઢી મૂકવામાં આવ્યો હતો એ જ યુવાને બૌદ્ધિક સાહસ દ્વારા ‘માઈક્રોસોફ્ટ’ કંપનીનું નિર્માણ કર્યું. એ યુવાન એટલે બિલ ગેટ્સ.

આઈ.આઈ.એમ.માં જોડાયેલો એક સામાન્ય પ્રોગ્રામર દરરોજ વીસ કલાક કામ કરીને રાત્રે ત્રણ વાગ્યે પોતાની રૂમે થોડો આરામ કરીને સવારે સાત વાગ્યે કામે લાગી જાય. તેણે સાહસ કરીને પોતાની પત્નીનાં ઘરેણાં વેચીને કંપની બનાવી. જેમાં આજે ૧.૩ લાખ લોકો કામ કરે છે અને જેનો વાર્ષિક નફો ૧૦૦૦ કરોડ છે તે કંપની છે ‘ઈન્ફોસીસ’ ને એ સાહસિક યુવાન એટલે નારાયણમૂર્તિ.

આ થયાં ભૌતિક સાહસનાં કેટલાંક પ્રેરક ઉદાહરણો, પરંતુ આ બધાં સાહસથી પર એક સાહસ છે - આધ્યાત્મિક સાહસ, જેના લીધે માણસને શાંતિ અને જીવનની સાર્થકતાનો અનુભવ થાય છે. ભક્તિનો માર્ગ એટલે શૂરવીરતાનો કે સાહસનો માર્ગ. ધ્રુવ, પ્રહ્લાદ, નચિકેતાથી લઈને નીલકંઠવર્ણીનાં એ આધ્યાત્મિક સાહસો અત્યંત પ્રેરક છે. આધ્યાત્મિક સાહસિકોનું એક ઉત્તમ ઉદાહરણ છે - પ્રમુખસ્વામી મહારાજના સંતોની ભગવી સેના.

આવો, આપણે યૌવનને સાહસિક બનાવીએ, સાર્થક બનાવીએ. ♦